अध्याय 12

मरियम और हारून की शिकायत

जैसे जैसे इस्राएल के स्वधर्म त्याग की कहानी आगे बढ़ती है वैसे ही इस अध्याय में कुड़कुड़ाहट और विद्रोह का भराव होता देखा जा सकता है। अध्याय 11 में लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाया; अध्याय 12 में इस्राएल के अगुवों में से दो अगुवों - मरियम और हारून - ने परमेश्वर के नियुक्त अगुवे मूसा के विरुद्ध बलवा किया। परमेश्वर ने उनके विद्रोह का प्रत्युत्तर, पहले यह स्पष्ट करते हुए कि मूसा उसका चुना हुआ है और दूसरा मरियम को दण्ड देने के द्वारा दिया।

विद्रोह (12:1-3)

[1]मूसा ने एक कूशी स्त्री के साथ विवाह कर लिया था। इसलिए मरियम और हारून उसकी उस विवाहिता कूशी स्त्री के कारण उसकी निन्दा करने लगे; [2]उन्होंने कहा, "क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं? क्या उसने हम से भी बातें नहीं कीं?" उनकी यह बात यहोवा ने सुनी। [3]मूसा पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था।

आयत 1. ये आरम्भिक शब्द प्रकट करते है कि **मूसा ने एक कूशी स्त्री के साथ विवाह कर लिया था। इसलिए मरियम और हारून उसकी उस विवाहिता कूशी स्त्री के कारण उसकी निन्दा करने लगे।** यह "कूशी स्त्री" कौन थी यह एक खुला प्रश्न रहा है। मूसा की एकमात्र पत्नी सिप्पोरा है जिसका नाम पंचग्रन्थ में दिया गया है। निर्गमन के अनुसार मूसा ने मिद्यान देश में सिप्पोरा से विवाह किया (निर्गमन 2:21; 4:25; 18:2)।

पुराने नियम में "कूश" शब्द सामान्यतः इथियोपिया देश की ओर संकेत करता है। KJV כּוּשִׁית *(कूशिथ)* का अनुवाद "कूशी स्त्री" के स्थान पर "इथियोपियाई स्त्री" के रूप में करता है। परिणामस्वरूप यह सम्भव है कि मूसा ने पहले सिप्पोरा से विवाह करने के बाद कूश अथवा इथियोपिया देश की एक स्त्री से विवाह किया हो।[1] अन्य सम्भावना यह है कि यहाँ पर "कूश" शब्द "मिद्यान" की समानता में हो और मरियम और हारून, सिप्पोरा के साथ मूसा के विवाह पर विरोध कर रहे हों। हबक्कूक 3:7 में "कूशान" और "मिद्यान" ऊपरी तौर पर समानार्थक शब्द हैं। अगर यह "कूशी," सिप्पोरा से अलग कोई स्त्री होती तो इस स्तर पर मरियम और हारून के पास विरोध करने के लिए कोई कारण नहीं होता क्योंकि सिप्पोरा भी एक गैर-

इस्राएली थी। मूसा की कूशी स्त्री के प्रति मरियम और हारून के विरोध का कारण बताया नहीं गया है। क्या उन्हें यह सच्चाई पसन्द नहीं आई कि मूसा ने एक "बाहरी" व्यक्ति से, एक परदेशी स्त्री अर्थात एक गैर-इस्राएली से विवाह किया? क्या वे उसकी पत्नी के पद की प्रमुखता से या मूसा पर उसके बलवान प्रभाव से क्रोधित थे?[2] बात चाहे जो भी हो परन्तु मूसा की पत्नी के विषय में मरियम और हारून की असहमति मूसा के नेतृत्व को चुनौती देने का मात्र एक बहाना था।

आयत 2. उन्होंने कहा, "क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं? क्या उसने हम से भी बातें नहीं कीं?" जैसा कि यह आयत बताती है कि मरियम और हारून ने शिकायत की और इसी प्रभाव में वे मूसा के समान पूरा ध्यान नहीं दे रहे थे इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मूसा की पत्नी के विरुद्ध उनका विरोध उनके वास्तविक दुख का एक बहाना था।[3] उनकी समस्या जलन थी। जहाँ तक उनकी बात थी उन्हें स्वयं को मूसा की समानता में समझना चाहिए था।

उनकी भावनाओं को सम्भावित रूप से समझा जा सकता है। हारून मूसा का बड़ा भाई था (निर्गमन 7:7) और वह मूसा का वक्ता रह चुका था (निर्गमन 4:16)। उसका अभिषेक महायाजक के रूप में किया गया था और उस क्षमता में वह ऐसा व्यक्ति था जिसे परमेश्वर उस समय उत्तर देता था जब ऊरीम और तुम्मीम का प्रयोग किया जाता था (निर्गमन 28:30)। मरियम मूसा की बड़ी बहन थी जिसने फ़िरौन की आज्ञा से उसकी रक्षा करने में उस समय सहायता की जब मूसा छोटा बालक था। निर्गमन कहता है कि केवल मूसा की बहन उस बच्चे का ध्यान करती रही जब उसे पानी में उतारा गया (निर्गमन 2:4-10); परन्तु जैसा मूसा की किसी अन्य बहन का नाम नहीं बताया गया इसलिए यह अनुमान लगाया गया कि यह पद मरियम की ओर संकेत करता है। साथ ही वह नबिया के रूप में जानी जाती थी। जब इस्राएल लाल सागर से छुड़ा लिया गया तब उसने विजय का गीत गाने में इस्राएली स्त्रियों की अगुवाई की (निर्गमन 15:20, 21)। बाद की पीढ़ियों ने अगुवों के रूप में हारून और मरियम को याद रखा जो मूसा के साथ इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाल कर लाने वाले बने (मीका 6:4)।

उनके इस प्रकार विशेष परिचय पाने के बाद भी उनकी यह बात **यहोवा ने सुनी** और उनसे अप्रसन्न हो गया। वास्तव में उनके शब्दों ने परमेश्वर को क्रोध दिलाया (12:9)।

आयत 3. इससे पहले कि पाठ्य यह रिकॉर्ड रखे कि परमेश्वर ने मरियम और हारून के शब्दों के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया की, एक प्रारम्भिक कथन सामने आता है। **मूसा पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था।**

गिनती के साथ पंचग्रन्थ को मूसा के द्वारा लिखे जाने के विरोध में इस आयत का प्रयोग एक तर्क के रुप में किया गया है। यह दावा किया गया कि अगर वह सच में एक "नम्र" व्यक्ति होता तो स्वयं के बारे में ऐसा कभी नहीं कहता। फ़िर भी यह सम्भव है कि मूसा ने पवित्र आत्मा की अगुवाई में सच्चाई के ये शब्द लिखे हों (इन आयतों के बीच तुलना करें 2 कुरि. 11:5; 12:11, 12)। अन्य विकल्प यह है कि

ये बाद में प्रेरणा पाए हुए किसी संपादक के द्वारा जोड़ दिए गए-जैसा कि उपयुक्त रुप से व्यवस्थाविवरण 34 में मूसा की मृत्यु की सूचना के बारे में है।

यहाँ पर प्रारम्भिक कथन शायद इसलिए शामिल किया गया जिससे यह समझाया जा सके कि स्वयं मूसा ने अपने भाई बहन के विद्रोह के प्रति प्रतिक्रिया क्यों नहीं की। एलदाद और मेदाद के प्रति अपने स्वभाव में पिछले अध्याय में भी उसकी नम्रता देखी जा सकती है। इन पुरुषों ने मूसा के नेतृत्व को तुच्छ जाना परन्तु फ़िर भी उन्होंने नबूवत का दान पाया (11:26-28)। मूसा से बलपूर्वक आग्रह किया गया कि वह उनके विषय में कुछ करे तब उसने मात्र इस प्रकार उत्तर दिया, "भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते ... !" (11:29)।

"नम्र" (עָנָו, *'अनव)* के लिए काम में लिया गया शब्द समर्पण के एक व्यवहार के रूप में व्यक्तित्व के गुण के बारे में अधिक नहीं सुझाता जिसने स्वयं मूसा को अपनी बहन और भाई के विद्रोह के प्रति प्रत्युत्तर देने के लिए रोका।[4] इस शब्द के लिए यह सबसे अच्छा दृश्य जान पड़ता है। फ़िर भी अन्य सम्भावना सुझाई गई कि "नम्रता" शब्द का अनुवाद "दुखी" के रूप में भी किया जा सकता है: "मूसा पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक दुखी व्यक्ति था।" क्लिओन रोजर्स ने इस सम्भावित अनुवाद के लिए निम्नलिखित कारण दिए: (1) क्रिया शब्द *'अनव* का अर्थ सामान्यतः "झुकना" होता है। किसी व्यक्ति को बल से ("वश में लाना"), समर्पण के साथ ("नम्र") अथवा समस्याओं और देखभाल ("दुखित") से झुकाया जा सकता है। (2) जो लोग परमेश्वर के सामने नम्र हैं वे ही नहीं परन्तु जो सामाजिक रूप से सताए गए और दुखी हैं उनके बारे में बताने के लिए भी इस शब्द का प्रयोग भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धि के साहित्य में किया गया है। (3) आसपास के सन्दर्भ में गिनती 11:14 मूसा को लोगों के बड़े भार को उठाते हुए प्रस्तुत करती है; वह इतना दुखी था कि वह मरना चाहता था। (4) अत्यन्त तुरन्त के सन्दर्भ में मरियम और हारून का विद्रोह हृदयविदारक था। स्वयं उसकी बहन और भाई उसको पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक दुखी व्यक्ति बनाते हुए उसके विरोधी हो गए थे।[5] "नम्र" अथवा "दुखी" होने के बाद भी उसने फिरकर उन पर वार करने के स्थान पर उनकी ओर से निन्दा सह ली।

प्रत्युत्तर (12:4-15)

मूसा के साथ परमेश्वर का निकट सम्बन्ध (12:4-8)

[4]इसलिए यहोवा ने एकाएक मूसा और हारून और मरियम से कहा, "तुम तीनों मिलापवाले तम्बू के पास निकल आओ।" तब वे तीनों निकल आए। [5]तब यहोवा ने बादल के खम्भे में उतरकर तम्बू के द्वार पर खड़ा होकर हारून और मरियम को बुलाया; अत: वे दोनों उसके पास निकल आए। [6]तब यहोवा ने कहा, "मेरी बातें सुनो: यदि तुम में कोई नबी हो, तो उस पर मैं यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आप को प्रगट करूँगा। या स्वप्न में उससे बातें करूँगा। [7]परन्तु मेरा दास मूसा

ऐसा नहीं है; वह तो मेरे सब घरानों में विश्वासयोग्य है।; 8उस से मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु आमने-सामने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूँ; और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है। इसलिए तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डरे?"

आयतें 4, 5. ये आयतें **मरियम** और **हारून के** प्रति परमेश्वर के आरम्भिक प्रत्युत्तर का वर्णन करती हैं। उसने स्पष्ट कर दिया कि वह किसी अन्य नबी की तुलना में **मूसा** के साथ निकट सम्बन्ध रखता है। उसने मूसा, हारून और मरियम से कहा कि वे **मिलापवाले तम्बू** [निवासस्थान] **के पास निकल आएँ** और वहाँ वह उन्हें **बादल के खम्भे** में दिखाई दिया।

आयतें 6-8. इस काव्य पद में परमेश्वर ने हारून और मरियम से कहा कि अन्य **नबि**[यों] से वह **दर्शन**[नों] और **स्वप्न**[नों] और (यह अर्थ लगाया गया कि) **गुप्त रीति** में बात करता आया है। "गुप्त रीति," חִידָה *(छिडाह)* के लिए काम में लिए गए शब्द का अनुवाद "पहेली" के रूप में भी किया जा सकता है। इसके विपरीत परमेश्वर **मूसा** को अपने **सब घरानों में विश्वासयोग्य** सेवक के रूप में देखता है। परमेश्वर उससे "गुप्त रीति" से नहीं परन्तु **प्रत्यक्ष** होकर बातें करता था। मूसा को विशेष रुप से विशेष अधिकार मिला हुआ था जिसके कारण वह **यहोवा का स्वरूप** निहार पाता था।

यह पद इब्रानियों 3:5, 6 का हवाला देता है जहाँ पर मूसा की तुलना और अन्तर यीशु मसीह के साथ किया गया है। यह प्रमाणित करता है कि अन्य स्थानों में बाइबल सिखाती है कि मूसा अद्वितीय व्यक्ति था। वह विशेष रूप से परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया था, वह इस्राएल को परमेश्वर की व्यवस्था देने के लिए मध्यस्थ के रूप में चुना हुआ और एक परम सिद्ध नबी का उदाहरण माना गया (देखें व्यव. 18:15-19)। उसे यह स्वीकृति मिली हुई थी कि वह परमेश्वर की महिमा को देख सके। निर्गमन 33:18 में मूसा ने परमेश्वर की महिमा देखनी चाही। परमेश्वर इस निवेदन से सहमत हो गया और मूसा के सामने मुख का दर्शन नहीं परन्तु "पीठ" का दर्शन देते हुए गुजरा (निर्गमन 33:19-23; 34:5-8)। परमेश्वर और मूसा के मध्य विशेष सम्बन्ध परमेश्वर के स्वयं के शब्दों से प्रकट किया गया है: **"उस** [मूसा] **से मैं आमने-सामने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूँ"** (देखें निर्गमन 33:11; व्यव. 34:10)। "प्रत्यक्ष" (NASB) मूल पाठ्य का अक्षरशः प्रदर्शन है; अन्य अनुवाद इसे "आमने-सामने" पढ़ते हैं (NIV; NKJV; NRSV; REB)। "प्रत्यक्ष" और "आमने-सामने" मुहावरे हैं जो एक निकट सम्बन्ध को - दो घनिष्ठ मित्रों के बीच बातचीत का सुझाव देते हैं। किसी अन्य नबी या याजक या अन्य व्यक्ति के पास मूसा के समान अधिकार नहीं था।

जैसा कि मूसा परमेश्वर का प्रतिनिधि था इसलिए अन्य लोगों को - जिसमें मरियम और हारून शामिल हैं - उसका अधिकार बिना किसी प्रश्न के स्वीकार कर लेना चाहिए था। उन्हें परमेश्वर के **दास मूसा की निन्दा करने से डरना** चाहिए था क्योंकि उसकी निन्दा करने का अर्थ था परमेश्वर की निन्दा करना।

परमेश्वर द्वारा मरियम को दण्ड दिया जाना (12:9-15)

9तब यहोवा का कोप उन पर भड़का, और वह चला गया; 10तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और मरियम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई। और हारून ने मरियम की ओर दृष्टि की और देखा कि वह कोढ़िन हो गई है। 11तब हारून मूसा से कहने लगा, "हे मेरे प्रभु, हम दोनों ने जो मूर्खता की वरन् पाप भी किया, यह पाप हम पर न लगने दे। 12और मरियम को उस मरे हुए के समान न रहने दे, जिसकी देह अपनी माँ के पेट से निकलते ही अधगली हो।" 13अत: मूसा ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी, "हे ईश्वर कृपा कर, और उसको चंगा कर।" 14यहोवा ने मूसा से कहा, "यदि उसका पिता उसके मुँह पर थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह लज्जित न रहती? इसलिए वह सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रहे, उसके बाद वह फिर भीतर आने पाए।" 15अत: मरियम सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रही, और जब तक मरियम फिर आने न पाई तब तक लोगों ने प्रस्थान न किया।

यह कारण स्थापित करने के बाद कि मरियम और हारून का आचरण गलत था, यहोवा ने उनकी शिकायत का प्रत्युत्तर सीधे तौर पर दिया। असहमति के एक नाटकीय प्रस्तुतिकरण के बाद परमेश्वर ने मरियम पर कोढ़ भेज दिया।

आयतें 9, 10. पाठ्य घोषणा करता है कि **तब यहोवा का कोप उन पर भड़का, और वह चला गया**; उसकी उपस्थिति का प्रतीक **बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया**। उस समय **मरियम** ने पाया कि वह **हिम के समान श्वेत होने** के साथ ही **कोढ़िन** गई है। NASB में "के समान श्वेत" शब्दों का प्रयोग स्पष्टीकरण के लिए किया गया है; मूल पाठ्य में ये शब्द देखने को नहीं मिलते। इब्रानियों इस प्रकार कहती है कि उसकी चमड़ी "हिम के समान" हो गई थी (देखें निर्गमन 4:6; 2 राजा 5:27)। इस दृश्य का व्यंग्य यह है कि मूसा की (सांवले रंग की) कूशी पत्नी के विरुद्ध बड़बड़ाने के बाद मरियम की स्वयं की चमड़ी का रंग बीमारी से हिम के समान श्वेत हो गया।

मरियम और हारून दोनों ही दोषी थे फ़िर यहाँ पर मरियम पर ही बीमारी क्यों आई और हारून पर कोई पीड़ा क्यों नहीं आयी? (1) एक सम्भावना यह है कि हारून इसलिए छोड़ दिया गया क्योंकि जब उसने मरियम पर आया हुआ दण्ड देखा तो अपने लिए मध्यस्थता करने के लिए उसने मूसा को पुकारा। अगर ऐसा था, तो अब भी परमेश्वर हारून के प्रति पक्षपात कर रहा था क्योंकि उसने मरियम को पश्चात्ताप करने का और मूसा की मध्यस्थता के लिए पुकार लगाने का अवसर नहीं दिया परन्तु हारून को इस प्रकार का अवसर दिया। (2) अन्य विवरण यह है कि हारून इसलिए छोड़ दिया गया "क्योंकि महायाजक के रूप में दिव्य अर्थव्यवस्था के प्रति उसकी भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण थी।"[6] अपवित्रता उसे अशुद्ध कर देती और इस कारण उसे अपने पवित्र कार्यों को करने की ज़िम्मेदारी से वंचित कर देती। (3) बहुत ही उपयुक्त सम्भावना यह है कि मरियम को दण्ड दिया

गया क्योंकि इस विद्रोह में अगुवाई उसी ने की थी। 12:1 में उसका नाम हारून के नाम से पहले आता है और क्रिया शब्द "बोला" अन्य पुरुष एकवचन स्त्रीलिंग है। ऐसा लगता है कि मरियम उकसाने वाली रही है जबकि हारून एक बार फ़िर परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने के लिए प्रभावित किया गया (देखें निर्गमन 32:1-6, 21-24)।[7]

आयतें 11, 12. जैसा पुराना नियम में "कोढ़" शब्द का प्रयोग चमड़ी के किसी प्रकार के रोग के लिए काम में लिया जाता था इसलिए यह जानना असम्भव है कि मरियम सटीक रूप से कौन सी बीमारी से ग्रसित हुई थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह एक पीड़ादायक बीमारी थी क्योंकि उसका वर्णन इस प्रकार किया गया: **और उस मरे हुए के समान जिसकी देह अपनी माँ के पेट से निकलते ही अधगली हो।**

अपनी बहन की गम्भीर स्थिति देखने के बाद हारून ने स्वयं के और मरियम के पाप की पहचान प्राप्त की और मूसा को यह कहते हुए पुकारा कि वह मरियम की बीमारी को दूर करे। उसने कहा, **"हे मेरे प्रभु, यह पाप हम पर न लगने दे।"** यह स्वीकार करते हुए कि उन्होंने **मूर्खता की**, उसने निवेदन किया कि वह फ़िर से ठीक कर दी जाए। मूसा की मध्यस्थता की खोज करने के द्वारा - और यहाँ तक कि मूसा को "हे मेरे प्रभु" पुकारने के द्वारा - हारून ने प्रकट किया कि उसने और मरियम ने मूसा के समान होने का दावा किया फ़िर भी वह जानता है कि उन दोनों भाई बहन की तुलना में मूसा का परमेश्वर के साथ निकट सम्बन्ध है।

आयत 13. मूसा अनुग्रह के साथ हारून के निवेदन से सहमत हो गया और उसने दोहाई दी, **"हे ईश्वर कृपा कर, और उसको चंगा कर।"** ऊपरी तौर पर परमेश्वर ने मूसा के निवेदन को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार मूसा ने अपनी बहन का जीवन उसी प्रकार बचाया जैसे एक बार उसने मूसा का जीवन बचाया था।

आयत 14. फ़िर भी परमेश्वर की माँग थी कि मरियम को **सात दिन तक छावनी** से बाहर कर दिया जाए और कहा, **"यदि उसका पिता उसके मुँह पर थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह लज्जित न रहती?"** किसी को लज्जित करने के लिए "उसके मुँह पर थूका" जाता था। इस प्रकार की प्रक्रिया "गम्भीर रूप से निन्दा ही नहीं थी ... परन्तु एक शाप भी थी।"[8] व्यवस्थाविवरण 25:9 बताती है कि अगर कोई पुरुष अपने भाई के वंश को चलाना न चाहे तो उसके भाई की पत्नी उसके मुँह पर थूक दे। जिन लोगों ने अय्यूब के दुख में उसकी हँसी उड़ाई वे उस पर थूकने से नहीं हिचकिचाए (अय्यूब 17:6; 30:10)। ठीक इसी समान दुर्व्यवहार की नबूवत यशायाह के द्वारा पीड़ा उठाने वाले दास (यशा. 50:6) के लिए की गई जो यीशु की पीड़ा में पूरी की गई (मत्ती 26:67; 27:30)।

आयत 14 का बिन्दु क्या है? परमेश्वर मूसा से कह रहा था कि मरियम के व्यवहार को हल्के में नहीं लिया जाएगा। परमेश्वर के द्वारा नियुक्त अगुवे के विरुद्ध उसका विद्रोह निर्णायक रुप से स्वयं परमेश्वर के प्रति विद्रोह था। हालांकि वह उसे चंगा करने जा रहा था फ़िर भी उसे सात दिन तक छावनी के बाहर रहना था और पाप की लज्जा को सहना था - "ठीक उसी प्रकार जैसे वह उस समय करती जब

परिवार के किसी वाद-विवाद में उस पर थूकने के द्वारा उसका पिता उसे अस्वीकार करने का चिन्ह प्रदान करता।"[9]

आयत 15. मरियम की सेवाओं के मूल्य को याद रखते हुए लोग, उसके बिना आगे की यात्रा को जारी रखने के स्थान पर, **सात दिन** तक उसको छावनी के बाहर रखने तक ठहरे रहे।

पारान के जंगल में आगमन (12:16)

[16]उसके बाद उन्होंने हसेरोत से प्रस्थान करके पारान नामक जंगल में अपने डेरे खड़े किए।

आयत 16. यह अध्याय इस प्रकार वर्णन करते हुए समाप्त होता है कि मरियम को वापस छावनी में स्वीकार करने के बाद इस्राएलियों ने **हसेरोत से प्रस्थान करके पारान नामक जंगल में अपने डेरे खड़े किए**। अब वे कुछ समय के लिए पारान में रुकने वाले थे और वहाँ पर पाप करने वाले थे जिसने उन्हें कनान से दूर कर दिया।

अनुप्रयोग

पाप के बारे में आश्चर्यजनक सत्य (10:11-12:16)

"पाप" शब्द, गिनती में सुनाई गई कहानी के प्राथमिक ढाँचे और विषय वस्तु का संक्षेप करता है। इस्राएल ने पाप किया और परमेश्वर ने लोगों को उनके पाप के लिए दण्ड दिया। उस पाप की कहानी अध्याय 11 और 12 में आरम्भ होती है। ये अध्याय पाप के बारे में कुछ आश्चर्यजनक सत्य प्रकट करते हैं।

आश्चर्यजनक समय में पाप उत्पन्न होता है। चौंका देनेवाले इस कथन के साथ अध्याय 11 आरम्भ होता है:

> फिर वे लोग बुड़बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे; अत: यहोवा ने सुना, और उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी, और छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी। तब लोग मूसा के पास आकर चिल्लाए; और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, तब वह आग बुझ गई (11:1, 2)।

गिनती के पाठकों के लिए 11:1, 2 की घटना अनपेक्षित है। इस पुस्तक में इस बिन्दु तक परमेश्वर के लोग उसकी आज्ञाओं के प्रति अद्‌भुत रूप से आज्ञाकारी रहे परन्तु आगे उन्होंने बुड़बुड़ाना आरम्भ कर दिया।

शायद हमें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। ये वही लोग थे जो मिस्र से निकलने के बाद सीनै के मार्ग की ओर बढ़ने के समय निरन्तर बुड़बुड़ाते रहे और ये वही लोग थे जिन्होंने एक सोने का बछड़ा तैयार किया और उसकी उपासना की। फ़िर भी उन पापों की घटना को लगभग एक वर्ष बीत चुका था। इसी बीच इस्राएली (जैसा रिकॉर्ड बताता है) परमेश्वर के निर्देशों का विश्वासयोग्यता से

पालन कर रहे थे - परन्तु विश्वासयोग्यता का यह समय उनके पाप का मात्र एक आरम्भ था।

किसी व्यक्ति की एक दिन की विश्वासयोग्यता इस बात की निश्चितता नहीं देती कि अगले दिन वह पाप नहीं करेगा। इस्राएल अच्छी प्रकार चल रहा था परन्तु आगे वह पाप में गिर गया। ऐसा ही हमारे साथ भी हो सकता है। हालांकि हम विश्वासयोग्यता से परमेश्वर के पीछे चल रहे हैं परन्तु अब भी हम गिर सकते हैं। "इसलिए जो समझता है, 'मैं स्थिर हूँ,' वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।" (1 कुरि. 10:12)।

आश्चर्यजनक तरीकों में पाप उत्पन्न होता है। इस्राएलियों ने दो बार पाप किया - अथवा समान प्रकार का पाप दो बार किया। पहला, वे लोग "बुड़बुड़ाने लगे" (11:1)। दूसरा, उन्होंने अपने भोजन के बारे में शिकायत की। यहाँ पर वर्णन इस प्रकार बताता है,

> फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी वह कामुकता करने लगी; और इस्राएली भी फिर रोने और कहने लगे, "हमें मांस खाने को कौन देगा। हमें वे मछलियाँ स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंतमेंत खाया करते थे, और वे खीरे, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी; परन्तु अब हमारा जी घबरा गया है, यहाँ पर इस मन्ना को छोड़ और कुछ भी देख नहीं पड़ता" (11:4-6)।

हमें आश्चर्यचकित क्यों होना चाहिए कि इस्राएलियों ने अपने भोजन के बारे में शिकायत की? आखिरकार, वे पहले भी इसके लिए कुड़कुड़ा चुके थे (निर्गमन 16:2, 3)। उनकी शिकायत के बारे में आश्चर्यचकित बात यह है कि वे परमेश्वर से भरपूर मात्रा में आशीष पाने के बाद भी वे परमेश्वर के विरुद्ध बोल रहे थे।

क्या ऐसी परिस्थिति हमारे मध्य में भी हो सकती है? वर्तमान में परमेश्वर के लोग अद्भुत रूप से आशीष पाए हुए हैं! निश्चित रूप से हम कभी भी शिकायत नहीं करेंगे क्योंकि हमारे पास माँस के स्थान पर मन्ना है (जैसा पहले था) ... या क्या हम शिकायत करेंगे? वह व्यक्ति जिसे अलग अलग स्थान में जाना होता है वह हो सकता है कि शिकायत करे कि उसके पास कोई साइकिल नहीं है; जिस व्यक्ति के पास साइकिल है वह हो सकता है कि शिकायत करे कि उसके पास कार नहीं है; जिस व्यक्ति के पास कार है वह हो सकता है कि शिकायत करे कि उसके पास एक अच्छी कार नहीं है! हो सकता है कि हम पौष्टिक भोजन का आनन्द लेते हों परन्तु शिकायत करते हों कि हम प्रतिदिन कुछ अलग खाने का खर्चा नहीं उठा सकते!

इस प्रकार की शिकायतों के बारे में परमेश्वर क्या सोचता है? यह अच्छा होगा कि हम इस्राएल की शिकायतों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया से सीखें। लोगों के प्रति "उसका कोप भड़क उठा" (11:1, 10, 33), और उसने कहा कि उन्होंने उसे तुच्छ जाना है (11:20)। इस कारण उसने इस्राएल को दण्ड दिया! इस प्रकार बुड़बुड़ाने वाले लोगों के पीछे चलने के विरोध में नया नियम हमें चेतावनी देता है (1 कुरि. 10:10; देखें फिलि. 2:14; 1 तीमु. 6:8)।

पाप के दुष्परिणाम आश्चर्यजनक हैं। इस्राएल के पाप के परिणाम क्या रहे? आइए परमेश्वर के सम्बन्ध में और मूसा की प्रतिक्रियाओं में इन परिणामों को देखें।

अध्याय 11 में रिकॉर्ड किए गए पापों का पहला परिणाम परमेश्वर के द्वारा दिया गया दण्ड था। लोगों ने परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया इसलिए उसने उनके मध्य आग भेजी (11:1-3)। तब, क्योंकि उन्होंने अपने भोजन के बारे में शिकायत की इसलिए उसने बटेरें भेजने के द्वारा उन्हें माँस दिया (11:31, 32)। हालांकि उसने कहा कि उनके खाने के लिए इतना माँस होगा कि अन्ततः वे उसे खाने से घृणा करने लगेंगे (11:18-20)। फ़िर परमेश्वर ने उनको "बड़ी मार" से मारा (11:33, 34)। परमेश्वर ने पापियों को मृत्यु का दण्ड दिया! वह दण्ड शिकायत करने वाले लोगों के लिए एक चोट के समान रहा होगा। अगर उन्होंने यह समझ लिया होता कि उनकी बुड़बुड़ाहट का परिणाम मृत्यु है तो शायद वे शिकायत नहीं करते! नई वाचा की आशीषें और शाप दोनों ही आत्मिक हैं। फ़िर भी पाप के लिए वर्तमान में दण्ड मृत्यु - आत्मिक मृत्यु और अन्त में अनन्त मृत्यु - है जिसकी घोषणा परमेश्वर करता है। वर्तमान में शायद लोग यह जानकर आश्चर्य करेंगे कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है" (रोम. 6:23)। जब लोगों ने लालसा की तब परमेश्वर ने बटेरें भेजने के द्वारा लोगों को माँस उपलब्ध करवाया। फिर भी पाठ्य संकेत देता है कि बटेरें आशीष के स्थान पर बड़े शाप का कारण रहीं। बटेरों का प्रबन्धन लोगों की बुड़बुड़ाहट पर परमेश्वर की स्वीकृति या अनाज्ञाकारी लोगों के लिए परमेश्वर की दया को प्रकट नहीं करता; यह मूसा को आराम पहुँचाने के लिए था (11:10-18) और परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने का साक्ष्य देने के लिए था (11:21-23)।

इस्राएल की बुड़बुड़ाहट के पाप का अन्य परिणाम यह रहा कि इससे मूसा निराश हो गया। परमेश्वर ने मूसा को उसकी निराशा और नकारात्मक व्यवहार के लिए डाँटने या दण्ड देने के स्थान पर उसकी आवश्यकताओं को पूरा किया।

पहला, उसने सत्तर पुरुषों में वही आत्मा समवाने के द्वारा मूसा को सहायता उपलब्ध करवाई जो उस पर थी (11:16, 17, 24-29)। लोगों का यह समूह निर्गमन 18 में यित्रो की सलाह पर नियुक्त किए गए लोगों से अलग था। सत्तर पुरुषों का काम यह था कि वे मूसा का भार उठाने में उसकी सहायता करें (11:17)। वह ज़िम्मेदारी पूरी करने के लिए उन्हें ऊपरी तौर पर नबूवत का दान दिया गया (11:26-29), और ऐसा लग रहा था कि उनका दान मात्र अस्थायी था (11:25)।

दूसरा, परमेश्वर ने लोगों के पास बटेरें भेजी। इससे मूसा को लोगों की शिकायतों से आराम मिला (11:18-23, 31-34)।

इस पाठ्य में मुख्य बिन्दु यह है कि पाप से परमेश्वर और मनुष्य दोनों ही प्रभावित होते हैं। यह परमेश्वर को क्रोध दिलाता है और परिणामस्वरूप उससे दण्ड लेकर आता है। यह अन्य लोगों को भी निराश करता है। उन समर्पित मसीही माता पिता के लिए यह कैसा कुचल देनेवाला प्रहार है जब एक बच्चा यहोवा से फ़िर जाता है! उन कलीसियाई अगुवों (जैसे कि प्रचारकों और प्राचीनों) के लिए यह कितना निराशाजनक है जब स्थानीय मण्डली के सदस्य उस प्रकार विश्वासयोग्य बने नहीं रहते जैसे उन्हें होना चाहिए! शायद इस प्रकार की एक

स्थिति इब्रानियों के लेखक की चिन्ता का कारण रही होगी कि इसके विषय में मसीही लोगों को उत्साहित किया जाए, "अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं" (इब्रा. 13:17)। कलीसिया के अगुवे उस समय दुखित होते हैं जब उनके कलीसियाई सदस्य पाप में गिर जाते हैं।

लोगों को आश्चर्यचकित करते हुए पाप किया जाता है। एक अन्य पाप का रिकॉर्ड गिनती 12 में देखने को मिलता है। इस बार हम उन लोगों से आश्चर्यचकित हो जाते हैं जिन्होंने पाप किया। वे "मिली-जुली भीड़" के लोग नहीं थे (11:4); सम्पूर्ण में वे लोग भी नहीं थे; इसके स्थान पर वे मरियम और हारून थे (12:1, 2)।

परमेश्वर ने मरियम और हारून को आगे आने के लिए कहा। फ़िर उसने उन्हें घुमा फिरा कर नहीं परन्तु स्पष्ट शब्दों में कहा कि मूसा एक अद्‌भुत तरीके से उसका नबी है और उसकी निन्दा करने से उन्हें डरना चाहिए था। मरियम कोढ़िन हो गई। मरियम को दण्ड मिला परन्तु हारून को (ऊपरी तौर पर) दण्ड क्यों नहीं मिला? शायद इसलिए कि इस विद्रोह को सुलगाने वाली मरियम थी। 12:1 में उसका नाम पहले आने का सच यह साक्ष्य उपलब्ध करवाता है कि शायद उकसाने वाली वही थी। हारून ने मूसा से कहा कि वह मरियम के लिए मध्यस्थता करे। जब मूसा ने उसके लिए प्रार्थना की तब प्रभु उसे चंगा करने के लिए सहमत हो गया। फ़िर भी उसे एक सप्ताह के लिए छावनी के बाहर रहना था। उस सप्ताह के बीच लोग वहीं पर छावनी किए रहे जहाँ पर वे थे (देखें 12:4-16)।

यह विवरण कुछ वैध सिद्धान्त बताता है. हमें कभी भी किसी स्त्री या पुरुष पर विश्वास नहीं रखना चाहिए, फ़िर चाहे वह कितना ही अद्‌भुत क्यों न लगे। हमें अपना विश्वास परमेश्वर पर रखना चाहिए! लोग हमें निराश करेंगे; परन्तु परमेश्वर कभी भी ऐसा नहीं करेगा। साथ ही, यह पद इस आशा को थामे रहता है (जैसा अन्य करते हैं) कि परमेश्वर का वह जन जो पाप करता है उसे पुनः स्थापित किया जा सकता है। कोई व्यक्ति कितनी ही गहराई तक क्यों न गिर जाए परन्तु पश्चात्ताप के द्वारा वह फ़िर से निकटता में आ सकता है। वर्तमान में परमेश्वर ऐसे पश्चात्तापी पापियों का स्वागत करने के लिए तैयार है जैसा उसने मरियम और हारून को उनके पाप के बाद स्वीकार किया। हममें से अधिकतर लोगों को यह याद दिलाने की आवश्यकता है कि कोई भी व्यक्ति - वह चाहे कितना ही पवित्र, कितना ही आत्मिक या प्रभु के प्रति कितना ही समर्पित क्यों न हो - परख से मुक्त नहीं है। "मनुष्य अपने आप को जाँच ले" (1 कुरि. 11:28; देखें 2 कुरि. 13:5), स्वयं की कमज़ोरियों की पहचान करे और उन परिस्थितियों से बचे जिसमें उपयुक्त रूप से उसकी परख हो सकती है।

निष्कर्ष। अनेक पहलुओं में पुराना नियम एक आधुनिक पुस्तक है। इसके पृष्ठ ठीक उसी समान कहानियाँ बताते हैं जैसा प्रतिदिन के समाचार पत्रों में देखने को मिलता है। गिनती 11 और 12 हमें पीड़ा देने वाली परिस्थितियों के बारे में बताते

हैं। इसमें मुख्य समाचार इस प्रकार पढ़े जा सकते हैं:

- "आत्मिक सफलता के पीछे पीछे आत्मिक असफलता"
- "महान आशीष के बाद भी कृतघ्न लोग बुड़बुड़ा रहे हैं"
- "लालच, कृतघ्नता और शिकायत ने परमेश्वर को क्रोध दिलाया और दण्ड लेकर आए और परमेश्वर के अगुवों को निराश किया"
- "परमेश्वर से और उसके चुने हुए अगुवों से फिरते हुए लोग पाप करते हैं"

वास्तव में ये ठीक वैसी ही परिस्थितियाँ हैं जैसी वर्तमान में उत्पन्न हो रही हैं। उस समय से लेकर अब तक लोग नहीं बदले। उनके उदाहरणों से हम चेतावनी पाएँ कि हम वैसा नहीं करें जैसा उन्होंने किया और उनके जैसे पापों के दोषी न बन जाएँ (1 कुरि. 10:1-12)।

समाप्ति नोट्स

[1]सम्भावित रूप से वह उस "मिली-जुली भीड़" का एक भाग रही होगी जो इस्राएलियों के साथ मिस्र से निकल कर आई थी (निर्गमन 12:38; देखें गिनती 11:4). [2]डेनिस टी. ओल्सन, *गिनती,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविले: जॉन नॉक्स प्रेस, 1996), 71; रेनिटा वीम्स, *जस्ट अ सिस्टर अवे: अ वूमनिस्ट विज़न ऑफ़ विमिन्स रिलेशनशिप्स इन द बाइबल* (सेन डिआगो: लूरामीडिया, 1988), 72-74. [3]ए. नोर्टसिज, *गिनती,* ट्रान्स. एड वेन डर मास, बाइबल स्टूडेन्ट्स कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1983), 107. [4]इब्रानी शब्द, जिसका प्रायः अनुवाद "नम्र" किया जाता है, (NASB; NKJV; NIV; NRSV; REB; NJB), को कुछ संस्करणों में "दीन" बताता गया है (KJV; ESV). [5]क्लिओन रोजर्स, "मोसिस: मीक ओर मिसरेबल?" *जर्नल ऑफ़ द एवेन्जलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी* 29, नम्बर 3 (सितम्बर 1986): 257-63. [6]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 113. [7]नोर्टसिज, 107. [8]फ़्रेडरिक एल. मोरियार्टी, "गिनती," इन *द जेरोम बिब्लिकल कमेन्ट्री,* एड. रेमण्ड ई. ब्राऊन, जोसफ़ ए. फ़िट्समायर, एन्ड रोलैंड ई. मर्फ़ी (ऐंगलवूड क्लिफ़्स, एन.जे.: प्रेन्टिस हॉल, 1968), 91. [9]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 198.